ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हरिहर काका

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : ५
पाठ का नाम : हरिहर काका
PPT-2

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

हरिहर काका पाठ की व्याख्या

1.हरिहर काका के यहाँ से मैं---------- दोस्ती हरिहर काका के साथ ही हुई।

तबियत - शरीर की स्थिति / मन की स्थिति
यंत्रणा - यातना / क्लेश / कष्ट
मनःस्थिति - मन की स्थिति
चंद - कुछ
आसक्ति - लगाव
व्यावहारिक - व्यवहार सम्बन्धी
वैचारिक - विचार सम्बन्धी
दुलार - प्यार
सयाना - वयस्क / बुद्धिमान / समझदार

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि वह अभी-अभी हरिहर काका के घर से लौटा है। वह पिछले कल भी उनके घर गया था, लेकिन हरिहर काका ने ना तो उससे पिछले कल बात की और ना ही उन्होंने आज कुछ बोला था। दोनों ही दिन लेखक हरिहर काका के पास बहुत समय तक बैठा रहा, लेकिन उन्होंने कोई बात नहीं की। जब लेखक ने उनसे उनके हालचाल के बारे में पूछा तो उन्होंने लेखक को एक बार सिर उठाकर देखा और फिर सिर झुका दिया और उसके बाद लेखक की ओर नहीं देखा। लेखक को उनकी एक नजर से ही सब कुछ समझ आ गया था। जिन कष्टों में वे थे और उनके मन की जो स्थिति थी, उनको अपने मुँह से कहने की भी कोई जरूरत नहीं थी क्योंकि उनकी आँखे ही सब कुछ कह रही थी। लेखक कहते हैं कि वह हरिहर काका के साथ बहुत गहरे से जुड़ा था। लेखक अपने गाँव के जिन कुछ लोगों का सम्मान करता था, हरिहर काका उनमें से एक थे। लेखक का हरिहर काका के प्रति जो प्यार था वह लेखक का उनके व्यवहार के और उनके विचारों के कारण था। लेखक का हरिहर काका के प्रति जो प्यार था उसके दो कारण थे। उनमें से पहला कारण था कि हरिहर काका लेखक के पड़ोसी थे और दूसरा कारण लेखक को उनकी माँ ने बताया था कि हरिहर काका लेखक को बचपन से ही बहुत ज्यादा प्यार करते थे। वे लेखक को अपने कंधे पर बैठा कर घुमाया करते थे। एक पिता का अपने बच्चों के लिए जितना प्यार होता है, लेखक के अनुसार हरिहर काका का उसके लिए प्यार उससे भी अधिक था। लेखक कहते हैं कि जब वह वयस्क हुआ या थोड़ा समझदार हुआ तो उसकी पहली दोस्ती भी हरिहर काका के साथ ही हुई थी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

2.हरिहर काका ने भी जैसे मुझसे दोस्ती----------यह कहानी तो अधूरी ही रह जाएगी।

प्रतीक्षा - इंतज़ार
फ़िलहाल - अभी / इस समय
मझधार - बीच में (जल प्रवाह या भवसागर के मध्य में)
विलीन - लुप्त हो जाना
विकल्प - दूसरा उपाय
उक्ति - कथन / वाक्य
ठाकुरबारी - देवस्थान

लेखक कहते हैं कि जब उसके पहले दोस्त हरिहर काका बने तो उसे ऐसा लगा जैसे हरिहर काका ने भी लेखक से दोस्ती करने के लिए अपनी इतनी लम्बी उम्र तक इंतजार किया हो। लेखक की माँ ने लेखक को बताया था कि उससे पहले हरिहर काका की गाँव में किसी से इतनी गहरी दोस्ती नहीं हुई थी। लेखक कहते हैं कि हरिहर काका उससे कभी भी कुछ नहीं छिपाते थे, वे उससे सब कुछ खुल कर कह देते थे लेकिन अभी इस समय उन्होंने लेखक से भी बात करना बंद कर दिया था। उनकी इस तरह की परिस्थिति को देख कर लेखक को उनकी चिंता हो रही थी। उनकी स्थिति लेखक को इस तरह लग रही थी जैसे कोई नाव जल प्रवाह या भवसागर के मध्य में फँस गई हो और उसमें बैठे लोग किसी को चिल्लाकर भी नहीं बुला सकते क्योंकि भवसागर के बीच में होने की वजह से उनकी आवाजें कहीं लहरों की आवाजों में मिल कर लुप्त हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में चुप-चाप वहीं पानी में ही अंतिम साँस लेने के अलावा कोई और रास्ता नहीं रह जाता। लेखक कहते हैं कि उसे हरिहर काका की ऐसी स्थिति पर विश्वास नहीं हो रहा था।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

ऐसी स्थिति में जैसे जीने के लालच में बेचैनी और छटपटाहट बढ़ जाती है, कुछ ऐसी ही स्थिति के बीच में हरिहर काका फँसे हुए लग रहे थे।

लेखक कहते हैं कि हरिहर काका की इस स्थिति को देख कर उसे लग रहा था कि वे शायद समझ नहीं पा रहे थे कि उन्हें क्या कहना चाहिए? अब शायद कोई ऐसी बात ही नहीं थी जिसको बोल कर वे अपना मन हल्का कर सकें और न ही कोई ऐसा वाक्य या कथा है जो उनके मन को शांति प्रदान कर सके। लेखक कहता है कि हरिहर काका की जो स्थिति है उसमें अगर वह स्वयं भी होता तो वह भी शायद इसी तरह गूँगा हो जाता अर्थात किसी से बात नहीं करता।

अब बात आती है कि हरिहर काका इस स्थिति में कैसे फँस गए। यह कौन सी स्थिति है जिसके बारे में लेखक बात कर रहा है। हरिहर काका को इस स्थिति में पहुँचाने के लिए कौन जिम्मेवार हैं। यह सब बताने से पहले लेखक अपने गाँव और खासकर उस गाँव में स्थित देवस्थान के बारे में संक्षेप में बताना चाहता है क्योंकि उसको जाने बिना कहानी को समझना नामुमकिन है और कहानी उसके बिना अधूरी है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

3.मेरा गाँव कस्बाई शहर----------यह परंपरा आज तक ज़ारी है।

मध्य - बीच में
प्रचलित - चलनसार
जाग्रत - जगाना
कलेवर - शरीर / देह / ऊपरी ढाँचा
मनौती - मन्नत
परंपरा - प्रथा / प्रणाली

लेखक कहते हैं कि उसका गाँव कस्बाई शहर आरा से चालीस किलोमीटर की दूरी पर हसन बाजार बस स्टैंड के पास स्थित है। गाँव की कुल आबादी लगभग ढाई-तीन हज़ार होगी। गाँव में तीन प्रमुख स्थान हैं। पहला-गाँव के पश्चिम किनारे में एक बड़ा-सा तालाब स्थित है। गाँव के बीचों-बीच एक बरगद का पुराना वृक्ष स्थित है और गाँव की पूर्व दिशा में ठाकुर जी का विशाल मंदिर है, जिसे गाँव के लोग ठाकुरबारी या देवस्थान कहते हैं।लेखक उसके गाँव में स्थापित देव-स्थान की स्थापना के बारे में कहता है कि गाँव में वह देव-स्थान कब स्थापित किया गया इसके बारे में कोई भी सही-सही नहीं बता सकता। इसके बारे में गाँव में जो कहानी चली आ रही है उसके अनुसार, बहुत साल पहले जब गाँव सही ढंग से बसा भी नहीं था तब न जाने कहाँ से एक संत गाँव में आकर उस स्थान पर झोंपड़ी बना कर रहने लगा। वह संत सुबह-शाम ठाकुरजी की पूजा किया करता था और लोगो से माँगकर ही खाना खाता था। वह लोगो में पूजा-पाठ की भावना को जगाने का काम

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

करता था। बाद में लोगों ने आपस में ही कुछ धन जमा करके उस झोंपड़ी के स्थान पर ठाकुर जी का एक छोटा-सा मंदिर बना दिया। फिर जैसे-जैसे गाँव बढ़ता गया, वहाँ की आबादी भी बढ़ती गई और साथ-ही-साथ मंदिर के आकार में भी बढ़ोतरी होती गई। लोग ठाकुर जी से पुत्र की मन्नत मांगते, मुक़दमे में जीत, लड़की की शादी किसी अच्छे घर में हो जाए, लड़के को नौकरी मिल जाए आदि मन्नत माँगते थे। मन्नत पूरी होने पर लोग अपनी ख़ुशी से ठाकुर जी को रूपए, ज़ेवर, और अनाज चढ़ाया करते थे। जिसको बहुत अधिक ख़ुशी होती थी वह अपने खेत का छोटा-सा भाग ठाकुर जी के नाम कर देता था और यह एक तरह से प्रथा ही बन गई जो आज तक चली आ रही है।

4.अधिकांश लोगों को विश्वास है कि----------लोग अनाज अपने घर ले जाते हैं।

अधिकांश - ज्यादातर
समिति - संस्था
सञ्चालन - नियंत्रण / चलाना
नियुक्ति - तैनाती / लगाया गया
विमुख - प्रतिकूल
चपेट - आघात / प्रहार
अहाता - चारों ओर से दीवारों से घिरा हुआ मैदान
अखंड - निर्विघ्न
दवनी - गेंहूँ / धान निकालने की प्रक्रिया
अगउम - प्रयोग में लाने से पहले देवता के लिए निकाला गया अंश

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि गाँव के ज्यादातर लोगों का विश्वास यह बन गया है कि अगर उनकी फसल अच्छी हो तो उसे वे अपनी मेहनत नहीं बल्कि ठाकुर जी की कृपा मानते हैं। किसी की मुक़दमे में जीत होती है तो उसका श्रेय भी ठाकुर जी को दिया जाता है। लड़की की अगर शादी जल्दी तय हो जाती है तो भी माना जाता है कि ठाकुर जी से मन्नत माँगने के कारण ऐसा हुआ है। लोगों के इस तरह के विश्वास का ही परिणाम है कि देव-स्थान का विकास गाँव की बाकी सभी चीज़ों से हज़ार गुना ज्यादा हुआ है। लेखक कहता है कि उसका गाँव अब गाँव के नाम से नहीं बल्कि देव-स्थान के वजह से ही पहचाना जाता है। उसके गाँव का यह देव-स्थान केवल उसके गाँव का ही सबसे बड़ा देव-स्थान नहीं है बल्कि यह देव-स्थान तो उस इलाके का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध देवस्थान है । लेखक कहते हैं कि देव-स्थान के नाम पर लगभग बीस बीघे जमीन है। देव-स्थान की देख-रेख और नियंत्रण के लिए एक धार्मिक लोगों की संस्था का निर्माण भी किया गया है, यह संस्था हर तीन साल में एक महंत और एक पुजारी को तैनात करती है जो देव-स्थान में पूजा-पाठ का ध्यान रखते है। लेखक देव-स्थान के काम के बारे में बताता हुआ कहता है कि देव-स्थान का काम लोगों के अंदर भगवान के प्रति आस्था और विश्वास पैदा करना और जो लोग धर्म के रास्ते से भटक गए हैं उन्हें सही रास्ता दिखाना है। देव-स्थान पर भगवान के भजन-कीर्तन की आवाजें गूँजती रहती हैं। जब कभी भी गाँव पर बाढ़ और सूखे का प्रहार होता है,

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

तो देव-स्थान के चारों ओर से दीवारों से घिरे हुए मैदान में तंबू लग जाते हैं और वहाँ लोग और देव-स्थान के साधु-संत बिना किसी रोक-टोक वाले या बहुत लम्बे समय तक चलने वाले हरि कीर्तन शुरू कर देते हैं। इतना ही नहीं अगर गाँव में कभी भी-कोई भी पर्व-त्योहार होता है, तो उसकी शुरुआत भी देव-स्थान से ही होती है। जैसे-होली का पहला गुलाल भगवान को लगाया जाता है, दीवाली का पहला दीप भी देव-स्थान पर ही जलाया जाता है। जन्म, शादी और जनेऊ के अवसर पर भी पहली भेंट भगवान के ही नाम जाती है। भगवान के ब्राह्मण-साधु व्रत-कथाओं के दिन घर-घर घूमकर कथा का बखान करते हैं। लोगों के आँगन में जब गेहूँ या धान निकालने की प्रक्रिया शुरू होती है और जब अनाज का ढेर तैयार हो जाता है, तो प्रयोग में लाने से पहले देवता के लिए अनाज का अंश निकाला जाता है, उसके बाद ही लोग अनाज को अपने घर ले जाते हैं।

5.ठाकुरबारी के साथ अधिकांश लोगों----------सिर्फ बात बनाना आता है।

घनिष्ठ - अत्यधिक निकटता
प्रवचन - वेद, पुराण आदि का उपदेश करना
सार्थक - उद्देश्य वाला
परिस्थितिवश - परिस्थितियों के कारण
फूटी आँखों न सुहाना - थोड़ा भी अच्छा न लगना
दोनों जून - दोनों वक्त

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि गाँव के कुछ लोगों का देव-स्थान के साथ बहुत निकटता का रिश्ता बन गया है, वे तन-मन दोनों से ही देव-स्थान के प्रति आस्थावान हैं। वे अपने कृषि के काम को ख़त्म करके बचा हुआ समय देव-स्थान में ही बिताते हैं। देव-स्थान के साधु-संतों के द्वारा वेद, पुराण आदि का उपदेश सुनकर और भगवान के दर्शन कर लेने से वे अपने जीवन को उद्देश्य से भरपूर मानते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि जैसे ही वे देव-स्थान में प्रवेश करते हैं, वे पवित्र हो जाते हैं और उनके द्वारा किये गए सारे बुरे काम अपने आप ही ख़त्म हो जाते हैं । लेखक कहते हैं कि हरिहर काका ने अपनी परिस्थितिओं के कारण देव-स्थान में जाना बंद कर दिया है। पहले वे लगभग हमेशा ही देव-स्थान जाया करते थे। मन बहलाने के लिए लेखक भी कभी-कभी देव-स्थान चला जाता था। लेकिन लेखक कहते हैं कि वहाँ के साधु-संत उसे बिलकुल भी पसंद नहीं थे। क्योंकि वे काम करने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते थे। भगवान को भोग लगाने के नाम पर वे दिन के दोनों समय हलवा-पूड़ी बनवाते थे और आराम से पड़े रहते थे। सारा काम वहाँ आए लोगो से सेवा करने के नाम पर करवाते थे। वे खुद अगर कोई काम करते थे तो वो था बातें बनवाने का काम।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

6.हरिहर काका चार भाई हैं।----------सूखा खा कर ही संतोष करना पड़ता।

आलावा - अतिरिक्त
क्लर्की - लिपिक / कर्मचारी
प्रतीक्षारत - इंतज़ार करना
इत्मीनान – तसल्ली
व्यंजन - अच्छा खाना
संतोष - तृप्ति / प्रसन्नता / हर्ष

लेखक हरिहर काका के बारे में बताता हुआ कहते हैं कि हरिहर काका और उनके भाई, चार हैं। सबकी शादी हो चुकी है। हरिहर काका के अतिरिक्त सभी तीन भाइयों के बाल-बच्चे हैं। बड़े और छोटे भाई के बच्चे बहुत समझदार हो गए हैं। उनमें से दो की शादियाँ भी हो गई हैं। उनमें से एक पढ़-लिखकर शहर में कहीं लिपिक की नौकरी कर रहा है। लेकिन हरिहर काका की कोई अपनी औलाद नहीं है। भाइयों में हरिहर काका दूसरे नंबर के भाई हैं। औलाद की चाह में हरिहर काका ने दो शादियाँ की थी। बहुत लम्बे समय तक वे औलाद की प्रतीक्षा करते रहे, लेकिन औलाद को बिना जन्म दिए ही उनकी दोनों पत्नियाँ स्वर्ग सिधार गई। लोगों ने हरिहर काका को तीसरी शादी करने के लिए कहा, लेकिन अपनी बढ़ती उम्र और अपने धार्मिक संस्कारों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने तीसरी शादी करने से इनकार कर दिया। वे तसल्ली और प्यार के साथ अपने भाइयों के परिवार के साथ रहने लगे थे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि हरिहर काका के पूरे परिवार के पास लगभग साठ बीघे खेत हैं। अगर हर एक भाई को बराबर-बराबर बाँट दें तो हर एक के हिस्से में पंद्रह बीघे जमीन आएगी। ये सभी लोग अपना गुजारा खेती-बाड़ी कर के ही करते हैं। शायद यही कारण था कि अब तक ये पूरा परिवार एक साथ ही रहता था। हरिहर काका के तीनों भाइयों ने अपनी-अपनी पत्नियों को यह कह कर रखा था कि हरिहर काका की अच्छे से सेवा होनी चाहिए। समय पर उन्हें नाश्ता-खाना आदि मिलना चाहिए। उनको किसी भी तरह की परेशानी नहीं होनी चाहिए। कुछ दिनों तक तो वे हरिहर काका की सभी चीज़ों का अच्छे से ध्यान रखती रही, परन्तु फिर कुछ दिनों बाद हरिहर काका को कोई पूछने वाला नहीं था। खाने की मेज़ सजाकर पंखा हिलाते हुए अपने-अपने पत्तियों को अच्छा-अच्छा खाना खिलाती थी और हरिहर काका के सामने जो कुछ बच जाता था वही परोसा जाता था। कभी-कभी तो हरिहर काका को बिना तेल-घी के ही रूखा-सूखा खाना खा कर प्रसन्न रहना पड़ता था।

7.आगे कभी हरिहर काका की तबीयत ----------काका को तो पहले ही खिला दिया गया होगा।

तबीयत - शरीर की स्थिति / मन की स्थिति
मशगूल - व्यस्त
धमाचौकड़ी - उछल-कूद
दालान - बरामदा
मोहभंग - प्रेम की भ्रान्ति का नाश

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow